

- ववाह करने का अधकार आंतरक वषय है। इस अधकार को संवधान में मौलक अधकारों के अंतरगत सुरक्षा परदान की गई है। वशवास और नषठा के मामले, जसमें वशवास करना भी शामिल है, संवधानक स्वतंत्रता के मूल में हैं।
- LGBTQ समुदाय सभी संवधानक अधकारों (नवजेत सहि जोहर और अन्य बनाम केंद्र सरकार, 2018) के हकदार हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय ने कहा क LGBTQ समुदाय के सदस्य अन्य नागरकों की तरह संवधान द्वारा परदान कयि गए सभी संवधानक अधकारों के हकदार हैं, जसमें "समान नागरकता" और "कानून का समान संरक्षण" भी शामिल है।

वशेष ववाह अधनयम (SMA), 1954:

- परचय:
 - भारत में ववाह संबंधत वयक्तगत कानूनों- हदू ववाह अधनयम, 1955; मुसलम ववाह अधनयम, 1954, या वशेष ववाह अधनयम, 1954 के तहत पंजीकृत कयि जा सकते हैं।
 - इसके अंतरगत यह सुनशचत करना न्यायपालका का करतव्य है क पत और पत्नी दोनों के अधकारों की रक्षा की जाए।
 - वशेष ववाह अधनयम, 1954 भारत की संसद का एक अधनयम है जसमें भारत और वदशों में सभी भारतीय नागरकों के लयि ववाह का प्रावधान है, चाहे दोनों पक्षों द्वारा कसी भी धर्म या आस्था का पालन कयि जाए।
 - जब कोई वयक्त इस कानून के तहत ववाह करता है तो ववाह वयक्तगत कानूनों द्वारा नहीं बल्क वशेष ववाह अधनयम द्वारा शासत होता है।
- वशेषताएँ:
 - दो अलग-अलग धार्मक पृष्ठभूमक लोगों को शादी के बंधन में एक साथ आने की अनुमत देता है।
 - जहाँ पत या पत्नी या दोनों में से कोई हदू, बौद्ध, जैन या सखि नहीं है, वहाँ ववाह के अनुषठापन तथा पंजीकरण दोनों के लयि परक्रयि नरधारत करता है।
 - एक धर्मनरपेक्ष अधनयम होने के कारण यह वयक्तयों को ववाह की पारंपरक आवश्यकताओं से मुक्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमका नभाता है।

आगे की राह:

- LGBTQ समुदाय के लयि एक ऐसे भेदभाव-रोधी कानून की आवश्यकता है, जो उन्हें लैंगक पहचान या यौन उनमुखता के बावजूद एक बेहतर जीवन और संबंधों का नरमाण करने में सहायता करे और जो वयक्त को बदलने के स्थान पर समाज में बदलाव लाने पर ज़ोर दे।
- LGBTQ समुदाय के सदस्यों को संपूर्ण संवधानक अधकार दयि जाने के बाद यह भी आवश्यक है क समलैंगक ववाह के इच्छुक लोगों को भी अपनी पसंद के वयक्त से ववाह करने का अधकार दयि जाए। ज्ञात हो क वर्तमान में वशिव के दो दर्जन से अधिक देशों ने समलैंगक ववाह को स्वीकृत दी है।

स्रोत: इंडयन एक्सप्रेस